२. अध्याय द्वितीय:
शोध संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

२.१. प्रस्तावना

२.२. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन का महत्व

२.३. समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

२.३.१. भारत में किये गये शोधकार्य

२.३.२. एम.एड् स्तर पर हुए शोधकार्य

2.1. प्रस्तावना :

किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम है। शोधकार्य के अंतर्गत शोध संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य है, अनुसंधान की समस्या से संबंध्द उन सभी प्रकार का साहित्य– पुस्तकों/किताबों, ज्ञानकोशों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से हैं। जिनके अध्ययन से अनुसंधान कर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा आदि तैयार करने एवं अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती हैं। उसके अभाव में अनुसंधान कार्य को उचित दिशा में बढ़ाया नहीं जा सकता। जब तक अनुसंधान कर्ता को ज्ञान न हो जाए कि, उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका हैं? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता हैं। गुड़बार तथा स्केटस् (1959) कहते है– "एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधी संबंधी आधुनिकतम् खोजों से परिचित होता रहें, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र में संबंधित सूचनाओं से परिचित होना आवश्यक हैं।"

2.2. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन का महत्व :

1. वह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए यह आवश्यक है कि अनुसंधान कर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहां तक है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. समस्या से संबधित साहित्य के पुनरावलोकन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
4. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता होती है।
5. किसी अनुसंधान कर्ता के पूरा वही अनुसंधान कार्य भली प्रकार किया जा चूका हो तो, हमारा प्रयास निरर्थक साबित होगा अतः संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन हमारे अनुसंधान कर्ता के प्रयास को सार्थकता प्रदान करता हैं।
6. इससे अनुसंधान कर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अनादृष्टि प्राप्त होती है।

2.3. समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन :

अनुसंधान के क्षेत्र में भाषा अधिगम समस्या को लेकर अनेक अनुसंधानकर्ताओं द्वारा शोधकार्य किया गया हैं। उनमें से महत्वपूर्ण एवं प्रस्तुत शोधकार्य से संबंधित शोधकार्य का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत हैं :

2.3.1. भारत में किये गये शोधकार्य :

1. **इन्द्रपुरकर** (1968) के द्वारा **'चन्द्रपुर के माध्यमिक विद्यालयों की भाषा संबंधी गलतियों का अध्ययन'** विषय पर शोधकार्य किया और निम्नांकित निष्कर्ष निकाले –
    1. छात्रों के द्वारा बोलने में बार बार गलतियां होती हैं।
    2. मौखिक परीक्षण द्वारा यह भी पाया गया कि शब्दों के उच्चारण में भी बार बार त्रुटियां होती हैं।
    3. लिखित परीक्षण से यह पाया कि बच्चें सुनकर सही शब्द नहीं लिख पाते हैं।

2. **बाजपेय** (1990) ने **'माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं के हिन्दी उच्चारण दोष का समीक्षात्मक अध्ययन'** विषय पर शोधकार्य किया और निम्नांकित निष्कर्ष पर पहुंचे–
    1. छात्र–छात्राओं की मात्रा संबंधी त्रुटियों में सार्थक अन्तर है।
    2. शब्दों की गलतिर्यां, मन से पढ़े गये शब्द तथा जिन शब्दों को छोड़ दिया उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

3. **आनन्द** (1984) ने **'कक्षा 5 के विद्यार्थियों का लेखन में प्रभाव एवं वर्तनी संबंधी त्रुटियों का निदान–दिल्ली के हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों में उपचारात्मक अध्ययन'** विषय पर कार्य किया और निम्न निष्कर्ष निकालें–
    1. वर्तनी में गलती का कारण मुख्यतः सही तरीके से न बोलना है।
    2. अक्षरों का सही उच्चारण उम्र के बढ़ने से कोई सुधार का न होना पाया गया।
    3. इसका कारण उच्चारण करने की सही क्षमता की कमी, जागृति का अभाव तथा पढ़ने की कमी पाया गया न कि, उम्र के अंतर से सबसे अधिक भूलने का कारण अक्षरों का अनुचित रुप से व्यवहार में लाना।

4. **श्रीवास्तव एवं अन्य** (1999) के द्वारा सुद्वढ़िकरण नामक प्रॉजेक्ट के अंतर्गत **'कक्षा 5 के 100 बच्चों पर हिंदी भाषा उपलब्धि ज्ञान का अध्ययन'** किया गया तथा पाया कि– 60 प्रतिशत बच्चें पढ़ने में, 30 प्रतिशत बच्चें बोलने में, 10 प्रतिशत बच्चें लिखने में तथा 30 प्रतिशत बच्चे मात्राओं में त्रुटियां करते हैं।

5. **सूरजभान सिंह** (1994) के द्वारा **'अहिंदी भाषा भाषीयों की हिंदी सीखने में कठिनाइयाँ और उनका समाधान'** विषय पर एक प्रलेख 'भारतीय आधुनिक शिक्षा–अप्रैल 1994' में प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने बताया है कि, द्वितीय भाषा सीखते समय हम उस भाषा के निम्नांकित तत्वों सीखते हैं :

   1. ध्वनि उच्चारण, 2. लेखन वर्तनी, 3. शब्द रुप, 4. वाक्य, 5. अर्थ और 6. सांस्कृतिक सामाजिक तत्व।

   और बताया कि, द्वितीय भाषा सीखते समय होनेवाली कठिनाइयों का संबंध इन्हीं छह स्तरो से हैं।

2.3.2. एम.एड् स्तर पर हुए शोधकार्य :

1. **नूरजहां मलिक** (1997) के द्वारा **'प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं में हिन्दी विषय की चयनित दक्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययन'** विषय पर किया गया अध्ययन में पाया कि –
   1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं में शब्दों और वाक्यों को देखकर लिखने की क्षमता ग्रामिण क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं में अधिक हैं।
   2. अक्षरों एवं शब्दों को सही आकार व क्रम तथा उसके बीच की दूरी में अंतर की दक्षता ग्रामिण क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में अधिक हैं।
   3. चयनित दक्षताओं में ग्रामिण क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं की उपलब्धि बेहतर हैं।

2. **छाया सक्सेना** (2001) के द्वारा **'प्राथमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं की हिन्दी में वर्तनी संबंधी त्रुटियों का अध्ययन'** विषय पर शोधकार्य किया और निम्नांकित निष्कर्ष पर पहुंचे–

1. कक्षा 3,4,5 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में परीक्षण द्वारा यह पाया गया कि लापरवाही, जल्दबाजी तथा लेखन न करने की आदत के कारण लेखन में कठिनाई की गई है।
2. मात्रात्मक तथा बिंदुगत की त्रुटियों की अशुद्धियां अधिक थी तथा सभी प्रकार की त्रुटियाँ विद्यार्थीयों ने लगभग की और ये असावधानी के कारण त्रुटियाँ पायी गई।
3. मातृभाषा तथा अन्य भाषा के कारण भी बालक–बालिकाओं की लेखन में त्रुटियां पाई गई।

3. **अमिता सिंह** (2000) ने **'कक्षा–6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन एवं निराकरण के उपाय'** विषय पर शोधकार्य किया और पाया कि –
    1. विद्यार्थियों को मुहावरों का वाक्य प्रयोग, शब्द से वाक्य बनाना, विश्लेषण, लिंगभेद युक्त लेखन में कठिनाई हैं।
    2. अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा शासकीय विद्यालयों में विद्यार्थी हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई का अधिक अनुभव करते हैं।
4. **विजयकुमार एच. परमार**(1999) के द्वारा **'कक्षा–7 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धियों का अध्ययन'** विषय पर शोधकार्य किया गया जिसमें उन्होंने पाया कि –
    1. हिन्दी भाषा उपलब्धि में लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।
    2. हिन्दी भाषा उपलब्धि के घटकों– शब्दज्ञान, वाक्यरचना, व्याकरण तथा लेखन में लिंग का किसी प्रकार कोई प्रभाव नहीं दिखाई पड़ता।
    3. लिंग का शब्दज्ञान के उपघटकों – समानार्थीशब्द, विरोधी श्ब्द, गलत वाक्य, सही करके लिखना, मुहावरें का वाक्य में प्रयोग पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
    4. लिंग का व्याकरण के उपघटक– संधि विग्रह पर सार्थक अंतर पड़ता है।
    5. लिंग का निबंध लेखन पर सार्थक अंतर पड़ता है।
    6. हिन्दी भाषा उपलब्धि में ग्रामिण एवं शहरी बालकों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
    7. हिन्दी भाषा उपलब्धि के घटकों में शब्दज्ञान, व्याकरण तथा लेखन का ग्रामिण एवं शहरी बालकों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
    8. शब्दज्ञान के उपघटकों में से विरोधी शब्द, अशुद्धशब्द के शुद्धशब्द रूप तथा शब्द समूह के लिए एक शब्द का ग्रामिण एवं शहरी बालकों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

9. वाक्य रचना उपघटकों का ग्रामिण एवं शहरी बालकों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
10. व्याकरण के उपघटकों में से विशेषण, स्त्रीलिंग तथा संधि विग्रह का ग्रामिण एवं शहरी बालकों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
11. लेखन के उपघटकों में से संख्या लेखन एवं पत्र लेखन का ग्रामिण एवं शहरी विद्यार्थियों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
12. हिन्दी भाषा उपलब्धि– पर स्कूल के प्रकार का सार्थक अंतर पड़ता हैं।
13. हिन्दी भाषा की उपलब्धि के घटकों में शब्दज्ञान, वाक्यरचना, व्याकरण तथा लेखन पर स्कूल के प्रकार का सार्थक प्रभाव पड़ता हैं।
14. शब्दज्ञान के उपघटकों में समानार्थी शब्द, विरोधी शब्द, अशुद्धशब्द के शुद्ध रूप पर स्कूल के प्रकार का सार्थक अंतर पड़ता हैं।
15. वाक्य रचना उपघटकों में शब्द से वाक्य रचना बनाना, गलत वाक्य सुधारकर फिर से लिखना तथा मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग पर स्कूल प्रकार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
16. व्याकरण के उपघटकों में से विशेषण, स्त्रीलिंग एवं बहुवचन पर स्कूल का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
17. लेखन के उपघटकों में से संख्या लेखन, अनुवाद, पत्र लेखन तथा निबंध लेखन पर स्कूल के प्रकारों का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
18. स्कूल उपलब्धि का लिंग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
19. स्कूल उपलब्धि के विविध विषयों में से केवल शारीरिक शिक्षण का लिंग पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
20. स्कूल उपलब्धि पर ग्रामिण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
21. स्कूल उपलब्धि के विविध विषयों में से अंग्रेजी, गणित, विज्ञान एवं शारीरिक शिक्षण पर ग्रामिण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
22. स्कूल उपलब्धि के विविध विषयों अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, हिन्दी, समाजविद्या एवं शारीरिक शिक्षण पर स्कूल के प्रकार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।